International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Advanced Studies of Multidisciplinary Research and Analysis – November 2023
Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

संस्कृत के महाकाव्यों में शब्द प्रेम

Mrs. Manisha Gupta

Assistant Professor, Department of Sanskrit, Shaheed Jeetram Govt. College, Nagar, Deeg, Rajasthan, India

सार

प्रेम युगों से सत्य था। कभी राधा-कृष्ण के रूप में तो कभी शिव पार्वती के रूप। बड़ी विचित्र गति होती है प्रेम की। जीवन के किसी न किसी कालखंड में हमें प्रेम की अनुभूति हो ही जाती है। जिस दिन आपको प्रेम की अनुभूति हो जाएगी। उस दिन आप संसार के झूठे प्रेम से मुक्त हो जाओगे। यह एक ऐसी संवेदना है, जो किसी को भी आपके तरफ खींच कर ला सकती है। चाहे वो मनुष्य हो या पशु पक्षी। यदि प्रेम को बांधा जा सकता तो हम भी बांध लेते अपने प्रियतम को एक मजबूत सी जंजीर से। प्रेम स्वतंत्र होता है। यह कभी बंधन में नहीं हो सकता।

परिचय

"प्रेमायदेवमिदमेव न वेदमेतद्,।
यो वेद वेदविदसावपि नैव वेद ।।"

अर्थ- वो प्रेम को जानकर भी अनजान ही रहते हैं, जिनको लगता है। यही और इतना ही प्रेम है। वे ऐसी ही बातें करते हैं।[1,2]

"दोषमपि गुणवति जने दृष्ट्वा गुणरागिणो न खिद्यन्ते।
प्रीत्यैव शशिनि पतितं पश्यति लोकः कलङ्कमपि।।"

अर्थात् – चंद्रमा के धब्बे को भी लोग प्रेम से देखा करते हैं। गुणवान के गुण देखकर गुणानुरागी खिन्न नहीं होते।

"कः किल न रोदित्यभीष्टविरहेण
घट्यमान-हृदयशल्यः प्रेम-परिलङ्घितो जन्तुः/"

अर्थ- प्रेमी वियोग के कारण हृदय को घाव किये हुए, कौन व्यक्ति प्रेम में नहीं रोता है अर्थात् हर व्यक्ति प्रेम में रोता है।

"यत्र प्रेम नास्ति तत्र ईश्वरः नास्ति यतोहि एकः एव प्रेम अस्ति यः अमरः, विश्रामः सर्वे मर्त्यः, अयं संसारः अपि मर्त्यः।"

अर्थात- जहाँ प्रेम नहीं होता वहाँ ईश्वर नहीं होता। क्योंकि एक प्रेम ही तो है जो अमर है बाकी तो सब नश्वर है यहाँ तक की ये संसार भी नश्वर है।

"सा सा सा सा जगति सकले कोऽयमद्वैतवादः।"
– प्रेम पर संस्कृत श्लोक
अर्थ- यह कैसा अद्वैतवाद है? मुझे हर जगह मेरी प्रेमिका ही नजर आ रही है।

"विनानुरागं हि प्रणयिनः प्रमदाया जीवनं व्यर्थमेव खलु !"
अर्थात- प्रेम के बिना किसी भी प्रेमी या प्रेमिका का जीवन व्यर्थ ही है।

"अन्यमुखे दुर्वादः स्वप्रियवदने तदेव परिहासः।[3,4]
इतरेन्धजन्मा यो धूमः सोगुरूभवो धूपः।।"

अर्थात- जो बात दूसरे के मुख से निंदा समझी जाती है। वही बात प्रेमिका के कहे जाने पर हंसी मान ली जाती है।साधारण लकड़ी का धूंआ-धूंआ माना जाता है और अगर की लकड़ी से निकले तो धूप समझा जाता है।

"उन्मत्त प्रेम संरम्भादारभंते यदअंगना/
तत्र प्रत्यूहमाधातुं ब्रम्हापि खलु कातरः।।"

अर्थ - अत्यधिक प्रेम में पागल युवतियाँ जिस कार्य को प्रारम्भ क़र देते हैं। भय के कारण ब्रम्हा जी भी उसमें विघ्न नहीं डालते हैं।

"प्रेमाहो क्वाचिदपि नेक्षते व्ययापम्/"
अर्थ- प्रेम कठिनाई की परवाह नहीं करता।

"प्रेमैव हृदयानि बध्नाति।"
अर्थात- प्रेम ही हृदयों को जोड़ता है।

"दयितं जनः खलु गुणीति मन्यते।"
अर्थ- प्रेम के कारण लोग प्रेमी को गुणवान समझते हैं।[5,6]

"प्रेम्णा तुल्यं बन्धनं नास्ति जन्तोः।"
अर्थात- धरा के संतुलन के लिए वृक्ष, नदी, पहाड़ के साथ समस्त प्राणियों का होना आवश्यक है। जीव नहीं होंगे, तो धरती का संतुलन बिगड़ेगा और जीवन कठिन हो जायेगा।

"रसो नाम परं प्रेम।"
अर्थात- प्रेम एक एहसास है।

"बलवती खलु वल्लभजनसंगमाशा/"
अर्थ- अपने प्रियतम से मिलने की इच्छा बहुत तीव्र और मजबूत होती है।

"दुर्निवारा हि नैसर्गिकी प्रीतिः।"
अर्थ- कभी कभी देखते होंगे व्यक्ति भक्ति में नाचने लगता है, वास्तव में वह प्रेम की चाल को व्यक्त करता है।

"प्रेम पश्यति भयान्यपदेऽपि।"
अर्थ- प्रेम को भयरहित स्थान पर भी भय लगता है।[7,8]

"अहो प्रेम्णो विचित्रा गतिः।"
अर्थात- प्रेम की गति विचित्र है।

"आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः. पंडितः।"
अर्थात-दया, प्रेम और करुणा मानवीय गुण हैं।

"प्रेम ईश्वरस्य महत्मपारितोषीकमस्ति।"
अर्थ- प्रेम ईश्वर का सबसे अच्छा उपहार है।

"प्रेम्णा तुल्यं बन्धनं नास्ति जन्तोः ।"
अर्थ- प्रेम के समान कोई बंधन नहीं होता।[9,10]

"प्रेम सत्यमस्ति !"
अर्थ- प्रेम सत्य है।
"स्नेहस्य प्रकृतिरहो विवेकशून्या।"
अर्थात- प्रेम स्नेह की प्रकृति विवेक शून्य होती है।

"स्त्रीणां हि सौभाग्यमदप्रसूतिः प्रियप्रसादो मदिरासहस्त्रम् ।।"
अर्थ- सौभाग्य रूपी मदिरा को उत्पन्न करने वाली स्त्री का प्रेम दस हजार मदिराओं के नशे के बराबर होता है।

विचार-विमर्श

"न हि वान्छति यः प्रियः कदा निजसर्वस्वसमर्पितअप्यहो।
प्रतिदानफलं प्रियां प्रति जगति प्रेम तदेव कथ्यते।।"

अर्थ - अपना सर्वस्व अर्पित कर, जो बदले में कुछ कामना नहीं करता है। उसे प्रेम कहते हैं। निस्वार्थ प्रेम करने पर भी जो प्रेमी अपने प्रेमिका से कुछ पाने की कामना न करे, उसे ही प्रेम कहते हैं।[11,12]

"भवतां हृदि प्रेमास्तु भवतां स्वास्थ्मुत्तमम्।
सद्भाव-शुद्धहृदयाःभवन्तु लोका दयान्विताः।।"

अर्थात- आप सभी के हृदय में परस्पर प्रेम-भाव रहें। आप सभी का स्वास्थ्य उत्तम हों। आप सभी लोग सद्भाव से परिपूर्ण शुद्ध हृदय से युक्त हों। ऐसी मेरी शुभकामना है।

"प्रेमास्तु तद् यन्न हि किञ्चिदेव, कस्माच्चन प्रार्थयतेऽविकार।"
अर्थ- जो विकार हीन रहकर कुछ नहीं मांगता, उसे प्रेम कहते हैं।

"भावो जन्मान्तरीणो हि स्थिरः सम्बन्ध उच्यते।"
अर्थ- जन्मांतर तक साथ रहने वाला भाव ही स्थिर प्रेम कहलाता है।

"विच्छिन्नसंहितस्य प्रेम्णः प्रत्यक्षितव्यलीकस्य / भवति बत विरसो रसो तापितशीतस्य पयस इव /।"

अर्थात- जैसे उबालकर शीतल जल का स्वाद नष्ट हो जाता है। ठीक उसी तरह परस्पर विश्वास खोने के कारण प्रेम टूटकर, किसी तरह पुनः जुड जाय, तो उसका रस समाप्त हो जाता है।[13,14]

"ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम्।।"

अर्थ- लेना, देना, खाना, खिलाना, रहस्य बताना और उन्हें सुनना ये सभी 6 प्रेम के लक्षण हैं।

"बन्धनानि खलु सन्ति बहूनि प्रेमरज्जुकृतबनधनमन्यत्। दारुभेद निपुणोऽपि षडङ्घ्रि निष्क्रियो भवति पङ्कजकोशे॥"

अर्थ- बन्धन तो अनेकों हैं पर प्रेम के बंधन जैसा नहीं। प्रेम बन्धन के कारण ही काठ में छिद्र करने वाला भ्रमर कमल कोष में निष्क्रिय हो जाता है।

"विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं ग्रहेषु च।
व्याधि तस्यो औषधे मित्रं धर्मो मित्रं मृत्यस च।।"

"दर्शने स्पर्शणे वापि श्रवणे भाषणेऽपि वा।
यत्र द्रवत्यन्तरङ्गं स स्नेह इति कथ्यते॥"

अर्थात- यदि किसी को देखने से या स्पर्श करने से, सुनने से या बात करने से हृदय द्रवित हो तो इसे स्नेह कहा जाता है।[15,16]

"भवति हृदयहारी क्वापि कस्यापि कश्चिन्न खलु गुणविशेषः प्रेमबन्धप्रयोगे /"
अर्थ- प्रेमबंधन के प्रसंग में कहीं भी कोई भी किसी का दिल चुरा सकता है। इसमें कोई गुण विशेष कारण नहीं होता है।

"प्रथमेऽपेक्ष्यते कालः प्रणयपत्रलेखने।
कालो नवविहङ्गानामुड्डयनेऽप्यपेक्ष्यते।।
'वात्स्यकोशः'"

अर्थात- प्यार का पहला पत्र लिखने में वक्त तो लगता है।
नये परिंदे को उड़ने में वक्त तो लगता है।

"शब्दादृते व्यर्थः शब्दश्चार्थादृते यथा। प्रिये! शब्दोऽहमर्थस्त्वं व्यर्थोऽहं त्वदृते तथा।।"

अर्थ- जैसे शब्द के बिना अर्थ तथा अर्थ के बिना शब्द व्यर्थ। उसी प्रकार मैं शब्द तुम अर्थ, तुम बिन मैं व्यर्थ।

"कर्गदं लेखनी नासीद् दूरभाषोऽपि नो यदा।
तदाप्यासीत्परं प्रेम मौनं तथाहि पावनम्।।"

भावार्थ - ना कागज था, ना कलम थी, ना फोन था,
प्रेम तब भी था, लेकिन पवित्र और मौन।[17]

"प्रेमैकानुभूतिः हृदानुभाव्या न तु दर्शिनी।।"
अर्थ - प्रेम एक एहसास है, जिसे आँखों से नहीं देखा जाता बल्कि दिल से महसूस किया जाता है।

"जीवितफलं हि प्रियतममुखावलोकनम् /"
अर्थ- जीने का सही मतलब तो तभी है जब अपनी प्रेमिका या प्रेमी के मुखमंडल को (हृदय की गहराइयों से प्रेम में डूबते हुए) निहारा हो।

"प्रेमैका पावनी गाथानुभूतेर्भुवि वर्तते।
प्रेमोन्मादी परं स्वार्थी संसारे नाभिनन्द्यते।।"

भावार्थ:- प्रेम एक पवित्र गाथा की अनुभूति है। स्वार्थवश प्रेम करनेवाले का संसार आदर नहीं करता।[18]

"विनानुरागं हि प्रणयिनः प्रमदाया जीवनं व्यर्थमेव खलु /"
अर्थ- प्रेम के बिना किसी भी प्रेमी या प्रेमिका का जीवन व्यर्थ ही है।

संस्कृत में प्रेम का इजहार
"त्वयि मे अनुरागः।" या "अहं त्वयि स्निह्यामि।"
अर्थात- मैं तुमसे प्रेम (प्यार) करता हूँ।

प्रेम शब्द सुनकर ही एक आनन्ददायक अनुभूति होती है। सब को अपने-अपने हिस्से का प्रेम मिले ऐसी मेरी कामना है। स्वतंत्र प्रेम,

बंधनं रहित प्रेम। प्रेम में बंधन होते तो हम भी अपने प्रियतम को जिसे मजबूत से अटूट बंधन से बांध लिए होते।

ऋतुसंहार :-

यह कालिदास की सर्वप्रथम कृति हैं. यह गीतिकाव्य है जिसमें षडऋतुओं का छः सर्गों में वर्णन हैं. ऋतुओं का वर्णन प्रायः उद्दीपन रूप में हुआ हैं।

मेघदूत :-

ऋतु संहार की अपेक्षा यह एक बड़ी रचना हैं. यह एक गीतिप्रधान खंड काव्य हैं. इसमें कुबेर के शाप से रामगिरी में निर्वासित एक यक्ष वर्षा ऋतु आने पर मेघ के द्वारा अपनी अलका प्रवासिनी प्रिया को संदेश भेजता हैं. इसके दो खंड हैं पूर्व मेघ तथा उत्तर मेघ। भाव पक्ष व कला पक्ष दोनों द्रष्टियों से यह एक उच्च श्रेणी का काव्य हैं. इसमें वियोग श्रृंगार रस है, फिर भी नैतिकता की शिष्टता काव्य में सर्वत्र है. पूर्व मेघ में प्रकृति के मनोरम दृश्यों का आकर्षक चित्रण है तथा उत्तर मेघ सौन्दर्य और प्रेम के चित्रण से भरा हुआ हैं. भावाभिव्यंजना तथा प्राकृतिक सौन्दर्य की द्रष्टि से यह अत्यंत ही सुंदर काव्य हैं.

कुमारसंभव :-

यह एक महाकाव्य हैं. इस महाकाव्य में पार्वती विवाह, कुमार जन्म, तारकासुर वध की कथा प्रमुख हैं, शेष प्रासंगिक कथायें हैं. इस महाकाव्य में 17 सर्ग हैं. परन्तु कुछ विद्वान् इनमें से प्रथम आठ को ही प्रमाणिक मानते हैं, शेष सर्गों को विद्वानों द्वारा बाद में जोड़ा हुआ माना गया हैं.

उदात्त, सरस एवं कोमल भावाभिव्यक्ति, स्वाभाविक एवं मंजुल कल्पनाएँ, कोमलकांत पदावली, अलंकारों का सहज स्वाभाविक प्रयोग, प्रकृति का सुरग्य चित्रण, तप, समाधि, संयोग, वियोग आदि का वर्णन इस काव्य की प्रमुख विशेषताएं हैं. कुमारसंभव कालिदास की उत्कृष्ट कोटि की रचना हैं.

रघुवंश:

रघुवंश महाकाव्य कालिदास एक उत्कृष्ट कृति है। सूर्यवंशी के 30 राजाओं का इस महाकाव्य के 19 सर्गों में वर्णन किया है। रघुवंश महाकाव्य में, एक वंश के कई नायकों को एक नायक के चरित्र के आधार के रूप में चित्रित किया गया है।

रघुवंश के 19 सर्गों में सूर्यवंशी राजाओं दिलीप से राम और राम के वंशजों का चरित्र चित्रण है। [16,17] इस महाकाव्य के पहले 9 सर्गों में, राम के चार पूर्वजों दिलीप, रघु, अज और दशरथ का वर्णन मिलता है और दसवें सर्ग से 15 वें सर्ग तक के 6 सर्गों में राम के जीवन वृत्त का वर्णन है।

16 वें सर्ग से 18 वें सर्ग तक के चार सर्गों में राम के वंशजों का वर्णन मिलता हैं। 19 वें सर्ग में कामुक अग्निवर्ण का वर्णन मिलता हैं। इस काव्य में सभी रसों का सुंदर वर्णन है। रघु और राम के युद्ध कथाओं में, जहाँ वीर रस का चित्रण किया गया है, वहां आर्त विलाप में करुण रस की अजस्र धारा प्रवाहित होती हैं।

रघु वंश में कवि द्वारा एक से एक सुंदर आदर्श प्रस्तुत किए गए हैं। रघुवंश के पास रघु के बेटे अज की इंदुमती से शादी, इंदुमती की मृत्यु और अज के करुण विलाप, राम और सीता के पुष्पक विमान द्वारा प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन आदि का एक आकर्षक चित्रण है।

मालविकाग्निमित्र:

यह कालिदास द्वारा रचित एक नाटक है। इसमें पाँच अंक हैं जो पुष्यमित्र के पुत्र, शुंगवंश के संस्थापक और मालविका के प्रेम की उन्नति का वर्णन करते हैं। यह कवि का पहला नाटक है, इसलिए इसमें काव्यात्मक कौशल का सबसे बड़ा रूप उपलब्ध नहीं है, फिर भी यह नाट्य कला के दृष्टिकोण से एक बहुत ही सुंदर रचना है।

विक्रमोर्यवशियम्:

कालिदास की नाट्यकला सम्बन्धी विकास की द्रष्टि से इस नाटक का दूसरा स्थान है। यह पांच अंकों का नाटक पुरुरवा उर्वशी की प्रसिद्ध पौराणिक कथा को बताता है। इसमें कवि ने पुरुरवा और उर्वशी के मूल प्रेम को बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्:

यह संस्कृत साहित्य का सर्वश्रेष्ठ नाटक हैं। भारतीय परम्परा इस नाटक को संस्कृत साहित्य का सर्वश्रेष्ठ नाटक मानती हैं काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला इसकी कथा महाभारत से ली गई हैं। इसमें सात अंक हैं।

यह हस्तिनापुर और शकुंतला के राजा दुष्यंत के प्रेम, वियोग और पुनर्मिलन की कहानी बयान करता है। इसमें श्रृंगार और करुण रस का सुंदर निष्पादन है। कालिदास का यह नाटक नाट्यशास्त्र का सबसे अच्छा उदाहरण है। नाटक का चैथा अंक सबसे अच्छा है। कवि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस नाटक का प्रत्येक पात्र चरित्र की दृष्टि से आदर और सम्मान के योग्य है, इसमें कविता की कोमलता, भावनाओं की गहराई और उदात्तता आदि का सुंदर समावेश है।

कालिदास का काव्य सौंदर्य:

कालिदास अपनी विषय - वस्तु देश की सांस्कृतिक विरासत से लेते हैं और उसे वे अपने उद्देश्य की प्राप्ति के अनुरूप ढाल देते हैं। उदाहरणार्थ, अभिज्ञान शाकुन्तल की कथा में शकुन्तला चतुर, सांसारिक युवा नारी है और दुष्यन्त स्वार्थी प्रेमी है। इसमें कवि तपोवन की कन्या में प्रेमभावना के प्रथम प्रस्फुटन से लेकर वियोग, कुण्ठा आदि की अवस्थाओं में से होकर उसे उसकी समग्रता तक दिखाना चाहता है। उन्हीं के शब्दों में नाटक में जीवन की विविधता होनी चाहिए और उसमें विभिन्न रुचियों के व्यक्तियों के लिए सौंदर्य और माधुर्य होना चाहिए।

त्रैगुण्योद्भवम् अत्र लोक - चरितम् नानृतम् दृश्यते।
नाट्यम् भिन्न - रुचेर जनस्य बहुधापि एकम् समाराधनम्।।

कालिदास के जीवन के बारे में हमें विशेष जानकारी नहीं है। उनके नाम के बारे में अनेक किवदन्तियां प्रचलित हैं जिनका कोई ऐतिहासिक मूल्य नहीं है। उनकी कृतियों से यह विदित होता है कि वे ऐसे युग में रहे जिसमें वैभव और सुख - सुविधाएं थीं। संगीत तथा नृत्य और चित्र - कला से उन्हें विशेष प्रेम था। तत्कालीन ज्ञान - विज्ञान, विधि और दर्शन - तंत्र तथा संस्कारों का उन्हें विशेष ज्ञान था।

उन्होंने भारत की व्यापक यात्राएं कीं और वे हिमालय से कन्याकुमारी तक देश की भौगोलिक स्थिति से पूर्णतः परिचित प्रतीत होते हैं। हिमालय के अनेक चित्रांकन जैसे विवरण और केसर की क्यारियों के चित्रण (जो कश्मीर में पैदा होती है) ऐसे हैं जैसे उनसे उनका बहुत निकट का परिचय है।

जो बात यह महान कलाकार अपनी लेखिनी के स्पर्श मात्र से कह जाता है, अन्य अपने विशद वर्णन के उपरांत भी नहीं कह पाते। कम शब्दों में अधिक भाव प्रकट कर देने और कथन की स्वाभाविकता के लिए कालिदास प्रसिद्ध हैं। उनकी उक्तियों में ध्वनि और अर्थ का तादात्मय मिलता है। उनके शब्द - चित्र सौन्दर्यमय और सर्वांगीण सम्पूर्ण हैं, जैसे द एक पूर्ण गतिमान राजसी रथ (विक्रमोर्वशीय, 1.4), दौड़ते हुए मृग - शावक (अभिज्ञान - शाकुन्तल, 1.7), उर्वशी का फूट - फूटकर आंसू बहाना (विक्रमोर्वशीय, छन्द 15), चलायमान कल्पवृक्ष की भांति अन्तरिक्ष में नारद का प्रकट होना [14,15] (विक्रमोर्वशीय, छन्द 19)। उपमा और रूपकों के प्रयोग में वे सर्वोपरि हैं।

सरसिजमनुविद्धं शैवालेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमिधकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

'कमल यद्यपि शिवाल में लिपटा है, फिर भी सुन्दर है। चन्द्रमा का कलंक, यद्यपि काला है, किन्तु उसकी सुन्दरता बढ़ाता है। ये जो सुकुमार कन्या है, इसने यद्यपि वल्कल - वस्त्र धारण किए हुए हैं तथापि वह और सुन्दर दिखाई दे रही है। क्योंकि सुन्दर रूपों को क्या सुशोभित नहीं कर सकता ?'

कालिदास की रचनाओं में सीधी उपदेशात्मक शैली नहीं है अपितु प्रीतमा पत्नी के विनम्र निवेदन सा मनुहार है। मम्मट कहते हैं: ' कान्तासम्मिततयोपदेशायुजे।' उच्च आदर्शों के कलात्मक प्रस्तुतीकरण से कलाकार हमें उन्हें अपनाने को विवश करता है। हमारे समक्ष जो पात्र आते हैं हम उन्हीं के अनुरूप जीवन में आचरण करने लगते हैं और इससे हमें व्यापक रूप में मानवता को समझने में सहायता मिलती है।

परिणाम

रामायण

रामायण (राम का मार्ग) कला का एक काम और एक आदर्श मानव आत्मा का दर्पण दोनों है। काव्य की यह अनूठी कृति वाल्मिकी की कलम से उस समय निकली जब किसी भी रूप में कोई काव्य नहीं लिखा गया था। इसलिए इसे आदिकाव्य और इसके रचयिता वाल्मिकी को आदिकवि कहा जाता है। रामायण की शुरुआत एक शिकारी के खिलाफ श्राप के प्रकोप से होती है जिसने एक नर पक्षी को मार डाला था जब वह अपने साथी के साथ प्रेमालाप कर रहा था। इस विस्फोट को रचनाकार ने जीवन की पूर्णता के लिए गहरी मानवीय करुणा की कविता रचने की कवि की शक्ति का संकेत माना है। इस महाकाव्य ने बाद के काल के कवियों और कलाकारों के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभाई। रामायण के पात्र अपनी विविध प्रकृतियों को देखते हुए व्यक्तिगत अध्ययन के पात्र हैं। राम अपने मानवीय गुणों और आत्म-बलिदान की प्रकृति की पूर्णता के कारण धर्म के अवतार हैं, उन्होंने कभी भी सत्य और योग्यता के नियमों का उल्लंघन नहीं किया।

रामायण की रचना कवि वाल्मिकी ने संस्कृत में की थी और इसके वर्तमान स्वरूप में 24,000 दोहे हैं जो सात कांडों में विभाजित हैं। इस महाकाव्य को इतनी लोकप्रियता हासिल है कि इसका पाठ करना महान पुण्य का कार्य माना जाता है। इसके कई अनुवाद स्वयं साहित्यिक योग्यता के महान कार्य हैं जिनमें तुलसीदास के रामचरित मानस, कंबन का तमिल संस्करण, कृतिबास का बंगाली संस्करण आदि शामिल हैं। पूरे उत्तर भारत में, इस कहानी की घटनाओं को राम लीला के रूप में खेला जाता है। दक्षिण भारत में रामायण और महाभारत दोनों महाकाव्य आज भी मालाबार के कथकली नृत्य - नाटक की कहानी बनाते हैं। रामायण की घटनाएँ मुगल, राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला का पसंदीदा विषय हैं।

यह कहानी पूरे दक्षिण पूर्व एशिया, विशेषकर कंबोडिया, इंडोनेशिया और थाईलैंड में विभिन्न रूपों में फैल गई, जिसे पारंपरिक जापानी, बाली थिएटर, नृत्य और छाया नाटक के विषयों के रूप में चुना गया। इंडोनेशिया के कई स्मारकों पर रामायण की घटनाएं उकेरी गई हैं। थाईलैंड में आज भी राजा को किंग राम और मुख्य राजमार्गों को किंग राम रोड कहा जाता है।

रामायण पुलों के रूप में महान वैज्ञानिक आविष्कारों की झलक भी प्रदान करता है जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर उठाया और गिराया जाता था। कई विवरण उत्कृष्ट नगर-योजना, इंजीनियरिंग, समुद्र पर पुल के निर्माण, पुष्पक विमान के रूप में हवाई जहाज के उदाहरण हैं जिसमें राम सीता, हनुमान और अन्य युद्ध नायकों के साथ अयोध्या आए थे। जृंभक - अस्त्र की संरचना पर शोध किए जा रहे हैं जो पूरी सेना को गहरी नींद में सुला सकता है।

रामायण आदर्श मानवाधिकारों की संहिता प्रदर्शित करती है। राम लंका पर कब्ज़ा करने में विश्वास नहीं करते बल्कि विभीषण को सत्ता पर कब्ज़ा करने में विश्वास रखते हैं। राम शत्रुता दूर करने और सद्गुण स्थापित करने में विश्वास रखते हैं। इसलिए कहा जाता है कि जब तक पृथ्वी पर पर्वतों और नदियों का अस्तित्व रहेगा तब तक रामायण कथा इस संसार में फलती-फूलती रहेगी।

महाभारत

मानव इतिहास का सबसे बड़ा महाकाव्य महाभारत भारत के दो प्रमुख महाकाव्यों, रामायण और महाभारत में से एक है। इसकी उच्च साहित्यिक योग्यता और धार्मिक प्रेरणा के कारण इसे विश्वकोश यानी ज्ञान का विश्वकोश कहा जाता है। यह धर्म पर एक व्याख्या है - एक आचार संहिता जिसमें एक राजा, एक योद्धा, आपदा के समय में रहने वाले व्यक्ति और पुनर्जन्म से मुक्ति पाने के इच्छुक व्यक्ति का उचित आचरण शामिल है।

इस महाकाव्य में एक लाख दोहे (1,00,000) हैं जो 18 पर्वों में विभाजित हैं जिनमें एक पूरक जोड़ा गया है जिसे हरिवंश (भगवान हरि यानी विष्णु की वंशावली) कहा जाता है। पारंपरिक लेखक ऋषि व्यास हैं, जिन्होंने संभवतः मौजूदा सामग्री को संकलित किया था जो लगभग 400 ईस्वी में अपने वर्तमान स्वरूप में पहुंची थी।

महाकाव्य में लगभग 5000 ईसा पूर्व भारत में हुई घटनाओं का वर्णन है। कहानी पांच पांडवों, मृत राजा पांडु के पुत्रों और अंधे राजा धृतराष्ट्र के एक सौ पुत्रों के इर्द-गिर्द घूमती है। अंधेपन के कारण धृतराष्ट्र को उनके पिता की मृत्यु के बाद उनके भाई पांडु के पक्ष में राजा बनाया गया। ईर्ष्या की यह भावना आगे चलकर अनगिनत रूपों में उभरी, हालाँकि उन्हें राजा तब बनाया गया जब पांडु ने राजपाट छोड़कर संन्यासी बन गये। शत्रुता ने पांडवों को अपने पिता की मृत्यु के समय राज्य छोड़ने के लिए मजबूर किया। वे विभाजित राज्य में कुछ वर्षों तक समृद्धि के साथ लौट आए, लेकिन जब कौरवों में सबसे बड़े दुर्योधन के साथ पासे के खेल में युधिष्ठिर अपना राज्य हार गए तो उन्हें फिर से 12 वर्षों के लिए जंगल में लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस झगड़े की परिणति कुरूक्षेत्र (हरियाणा राज्य में आधुनिक दिल्ली के उत्तर) के मैदान में एक महान युद्ध में हुई, जिसमें केवल पांच पांडव, द्रौपदी और भगवान कृष्ण जीवित बचे थे।

कुल कार्य के लगभग पांचवें हिस्से को कवर करने वाली मुख्य कहानी कई अन्य प्रसिद्ध प्रसंगों जैसे नल-दमयंती, सावित्री-सत्यवान, शकुंतला-दुष्यंत आदि के साथ जुड़ी हुई है, जिसमें तीर्थ स्थानों, मिथकों, नैतिक उपदेशों, शासक राजवंशों के वंशावली विवरणों का वर्णन है। [16]सृजन का एक काल्पनिक इतिहास. यहाँ जीवन की समग्रता है जैसे इसे यहाँ और अभी जीया जाता है और फिर भी इसे पार करने और अनंत काल के दायरे में प्रवेश करने की दृढ़ मानवीय इच्छा है।

महाकाव्य में अमूल्य युद्ध रणनीतियों और मिसाइलों का उल्लेख है जिन पर आधुनिक समय में शोध किया जा रहा है। ब्रह्मास्त्र और उसके बाद के प्रभावों का वर्णन आधुनिक घातक परमाणु हथियारों के वर्णन से मेल खाता है। ऐसा कहा जाता है कि जिस स्थान पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया जाता है वहां बारह वर्षों तक बारिश नहीं होती है। आधुनिक शोधकर्ताओं ने पाया है कि कुरूक्षेत्र की रेडियो-सक्रियता अभी भी अन्य क्षेत्रों की तुलना में ढाई गुना अधिक है। जैसा कि हमने लाक्षागृह, महल से जंगल तक सुरंग, मयासुर द्वारा निर्मित शाही महल और इंद्रप्रस्थ शहर के लेआउट के बारे में पढ़ा था, वास्तुकला, निर्माण-इंजीनियरिंग, सुरंग बनाने और राजमार्गों के निर्माण में प्रौद्योगिकी आश्चर्यजनक रूप से उन्नत थी।

इस महाकाव्य के कुछ खंड अलग-अलग ग्रंथों के रूप में प्रसिद्ध हो गए हैं जैसे नारायणीयम (पुस्तक XIII), भगवद्गीता (दोनों VI), अनुगीता (पुस्तक XIV), विदुर नीति और हरिवंश जिसमें कृष्ण की पहचान भगवान विष्णु और अन्य अवतारों से की गई है। भी वर्णित हैं.

हमारी सांस्कृतिक विरासत का यह रत्न न केवल संस्कृत में कार्यों के बाद कार्यों में बल्कि अन्य सभी भारतीय भाषाओं, बर्मा, मलेशिया, थाईलैंड, कंबोडिया, लाओस और कई अन्य भाषाओं में भी आगे बढ़ाया गया है। कहानी को इतनी लोकप्रियता मिली कि इसकी विभिन्न घटनाओं को पत्थर में चित्रित किया गया है, विशेष रूप से कंबोडिया में अंगकोरवाट और अंगकोर थॉम में मूर्तिकला राहत में और कई भारतीय लघु चित्रकारों द्वारा।

इस प्रकार इसने कई कविताओं, नाटकों, उपन्यासों और यहां तक कि टेलीविजन धारावाहिकों के लिए एक विषयगत स्रोत के रूप में काम किया है। कहा जाता है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में जो कुछ यहां लिखा है वह कहीं और मिल सकता है लेकिन जो यहां नहीं है वह कहीं और नहीं मिल सकता।

निष्कर्ष

भगवद्गीता

भगवद्गीता सार्वभौमिक ज्ञान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक दार्शनिक ग्रंथ है। इसका केंद्रीय संदेश मानव व्यक्तित्व में मौजूद सभी संभावनाओं के विकास का आह्वान करना है। यह महाभारत के भीष्म पर्व का एक भाग है। इसमें केवल 700 श्लोक हैं लेकिन इसकी सामग्री की सीमा बहुत बड़ी है। गीता उस नैतिक प्रश्न से कहीं आगे जाती है जिसके साथ वह शुरू होती है, मोटे तौर पर ईश्वर की प्रकृति और उन साधनों पर विचार करती है जिनके द्वारा मनुष्य उसे जान सकता है। यह कर्म, भक्ति और ज्ञान के दर्शन का सुंदर समन्वय करता है। एक परिचित श्लोक में उपनिषद की तुलना गाय से की गई है और कृष्ण की तुलना उस दूधवाले से की गई है जो अपने बगल में बछड़े अर्जुन के साथ इस गीता रूपी अमृत को दुहता है।

गीता हमें अपने धर्म का विचार किए बिना सभी की निस्वार्थ सेवा करना सिखाती है। सच्चा विद्वान व्यक्ति सभी को समभाव से देखता है, चाहे वह साधु हो, दुष्ट हो या जानवर हो। वह चाहता है कि हम सक्रिय रहें, निष्क्रिय और निष्क्रिय नहीं।

कृष्ण परमात्मा तक पहुँचने के सामान्य मार्गों की बात करते हैं जैसे कि ज्ञान, ध्यान, अच्छे कर्म, आसक्ति और प्रेम का त्याग और ईश्वर के प्रति समर्पण। गीता धर्म से ऊपर है. गीता संपूर्ण मानव जाति के लिए है। वास्तव में गीता स्वयं को प्रबंधित करने का विज्ञान है।[17]

इसकी लोकप्रियता प्राचीन और आधुनिक दोनों समय में इस पर लिखी गई टिप्पणियों, शब्दावलियों और व्याख्यात्मक पुस्तकों की संख्या से स्पष्ट है। सबसे प्रारंभिक टीका महान दार्शनिक शंकर की है। प्राचीन काल की अन्य महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ भास्कर, रामानुज, माधव, नीलकंठ, श्रीधर, मधुसूदन आदि की हैं। उत्कृष्ट आधुनिक टिप्पणियों में बीजी तिलक, अरबिंदो, गांधी, राधाकृष्णन की हैं।[18] विश्व की लगभग सभी भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।

वास्तव में गीता अपने शाश्वत मूल्यों के साथ संपूर्ण मानव जाति की पथप्रदर्शक के रूप में सदैव सेवा कर सकती है।

संदर्भ

[1] आधुनिक हिन्दी महाकाव्य (भारत का आंकिक पुस्तकालय)

[2] WorldChronicle.net

[3] Clay Sanskrit Library publishes classical Indian literature, including the Mahabharata and Ramayana, with facing-page text and translation. Also offers searchable corpus and downloadable materials.

[4] Humanities Index has notes on epic poetry.

[5] काव्य

[6] मुक्तक काव्य

[7] खण्डकाव्य

[8] भारतीय महाकाव्य

[9] महाकाव्य (एपिक)

[10] रामायण (वाल्मीकि) नायक -राम

[11] महाभारत (वेद व्यास)- नायक-अर्जुन

[12] बुद्धचरित (अश्वघोष)-नायक-बुद्ध्

[13] भट्टिकाव्य (भट्टि)

[14] कुमारसंभव (कालिदास)

[15] रघुवंश (कालिदास)- नायक -राम

[16] किरातार्जुनीयम् (भारवि)

[17] शिशुपाल वध (माघ)

[18] नैषधीय चरित (श्रीहर्ष)

International Journal of Trend in Scientific Research and Development
IJTSRD
International Journal of Trend in Scientific Research and Development
ISSN: 2456-6470